Teacher Training College
C-11 Guidance & Counselling

शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर वैयक्तिक निर्देशन

व्यक्ति की आयु में परिवर्तन होने के साथ-2 उसकी वैयक्तिक समस्याओं में भी परिवर्तन होते रहते हैं। यही कारण है कि शिक्षा के विभिन्न स्तरों पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक, जूनियर हाई स्कूल, हाईस्कूल एवं कॉलेज तथा विश्वविद्यालय पर वैयक्तिक निर्देशन के उद्देश्यों एवं विधियों में अन्तर पाया जाता है। अतः उपबोधक के लिए यह आवश्यक है कि उसे बालक की आयु के विभिन्न स्तरों की मनोवैज्ञानिक विशेषताओं का ज्ञान होना चाहिए, क्योंकि वैयक्तिक समस्यायें मुख्य रूप से मनोवैज्ञानिक विशेषताओं से ही सम्बन्धित होती हैं।

1) बालकों को कविता एवं कहानी कहकर उन्हें अपनी अभिव्यक्ति का अवसर उपलब्ध प्रदान करने में सहायता देना।

2) बालकों में स्वयं आत्म निर्भर करने की भावना का विकास करना जैसे - खिलौनों को यथास्थान रखकर, अपने वस्त्रों को स्वच्छ रखकर इत्यादि।

3. बालकों को स्वयं का तथा अपने परिवेश का उचित मूल्यांकन करने की दिशा में निर्देशन के द्वारा सहायता प्रदान की जानी चाहिए।

Phone/Email/Notes

Notes

4. बालकों के लिए खेल एवं खिलौनों की समुचित व्यवस्था करना मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि खेल बालकों को नेतृत्व की भावना का।

MARCH
M 6 13 20 27
T 7 14 21 28
W 1 8 15 22 29
T 2 9 16 23 30
F 3 10 17 24 31
S 4 11 18 25
S 5 12 19 26

Scanned with CamScanner

5. बालकों को अपने स्वास्थ्य की देख-रेख में सहायता करना।

6. बालकों में अच्छी आदतों के निर्माण में सहायता प्रदान करना।

i) स्वयं के हाथों से काम करके, गीतों का अनुसरण करके, कहानियों को अनुभव करके, स्वयं को व्यक्त करना एवं दूसरों की बात को ध्यानपूर्वक सुनना।

2. पालतू जानवरों की देख-रेख करके, खेल की वस्तुओं का उनके स्थान पर रखकर स्वयं के वस्त्रों की इस्तेमाल करके उत्तरदायित्व युक्त व्यवहार करना बालकों को सीखना।

3. परस्पर एक-दूसरे से मिलना तथा अपने अनुभवों का परस्पर आदान-प्रदान करना, खिलौनों का आदान-प्रदान करना, नम्रता सीखना, क्रोध को नियन्त्रित करने की आदत का निर्माण करना, नेतृत्व करना सीखना तथा अनुयायी के रूप में समूह में उत्तरदायित्व की भावना का प्रदर्शन करना और खेल में ईमानदारी की भावना का प्रदर्शन करना।

इन समस्त कार्यों, इस स्तर पर व्यक्तित्व निर्माण के महत्वपूर्ण अंग हैं। अतः पूर्व प्राथमिक स्तर पर बालकों को शैक्षिक कार्यों के साथ-साथ इन समस्त कार्यों को भी सीखना चाहिए।

2) प्राथमिक स्तर पर

इस स्तर पर बालकों की आयु 6 वर्ष से 11 वर्ष तक की होती है। अतः इस आयु वर्ग के बालकों की विशिष्टताओं में रुचि में रखकर ही, व्यावसायिक निर्देशन का गठन किया जाना चाहिए। क्रो एण्ड क्रो का कहना है कि संयुक्त राज्य अमेरिका के कैलीफोर्निया राज्य के मोडेस्टो के विद्यालयों में चलने वाले निर्देशन कार्यक्रमों की छात्रों को निम्नलिखित मूलभूत आवश्यकताओं को पूर्ण करने का प्रयास किया जाता है।

i) व्यावसायिक कौशल - विश्व के कार्यों की सामान्य जानकारी।

2.) अवकाश काल के क्रियाकलाप - व्यक्तिगत रुचियों तथा मनोरंजन के सम्बन्ध में।

3) अनुशासन - स्नेहयुक्त एवं सुदृढ़, आत्म-अनुशासन की ओर उन्नति।

4) मित्रों तथा समाज स्वीकृति की इच्छा - बालकों एवं बालिकाओं के बीच

5) आधारभूत कौशलों की जानकारी - अधिगम तथा अवबोध की योग्यतानुरूप।

6.) उत्तम स्वास्थ्य - पर्याप्त व सन्तुलित भोजन, अपेक्षित नींद एवं आराम।

ne/Email/Notes

MARCH
M 6 13 20 27
T 7 14 21 28
W 1 8 15 22 29
T 2 9 16 23 30
F 3 10 17 24 31
S 4 11 18 25
S 5 12 19 26

Scanned with CamScanner

इस स्तर पर बालकों की उपर्युक्त आवश्यकताओं को प्रारंभ में समझकर ही व्यक्तिगत विभिन्नताओं की व्यवस्था की जानी चाहिए। एवम् प्रतिदिन भी इस स्तर पर, क्रियाओं के आयोजन निम्नलिखित हो सकते हैं।

i) बालकों में भावनात्मक असन्तुलन को नियंत्रित होने से रोकना।

2) प्राथमिक स्तर से ही बालकों में आत्म-अनुशासन की भावना का विकास आरम्भ करना। अनुशासन के वास्तविक उद्देश्यों को समझाने पर ही बालकों में आत्म-अनुशासन की भावना का विकास हो सकेगा। अतः बालकों को अनुशासन का महत्व समझाने हेतु, विद्यालयों की विभिन्न क्रियाओं में उन्हें भाग लेने।

3) सर्जनात्मक कार्यों के प्रति छात्रों रुचि का विकास करना तथा रुचि के विकास हेतु अवसर उपलब्ध कराना चाहिए।

4) इस आयु के बालकों में खेल की भावना के आधार पर, सामाजिकता का विकास भी किया जाना चाहिए। अनुशासन के वास्तविक उद्देश्यों को समझाने पर ही बालकों में आत्म-अनुशासन की भावना में विकास हो सकेगा। अतः बालकों को अनुशासन का महत्व समझाने हेतु विद्यालय की विभिन्न क्रियाओं में उन्हें भाग लेने का अवसर प्रदान

APRIL

M		3	10	17	24
T		4	11	18	25
W		5	12	19	26
T		6	13	20	27
F		7	14	21	28
S	1	8	15	22	29
S	2	9	16	23	30

Notes

Scanned with CamScanner

3. छात्रों को स्व: रोजगार सम्बन्धी सूचनाओं तथा अवसरों से अवगत कराना और स्थानापन्न सेवाये प्रदान करना।

4) व्यक्तिगत एवं सामाजिक निर्देशन देना

1) छात्रों के समायोजन सम्बन्धी समस्याओं को पहचानना और उनके समाधान में सहायता करना।

2) छात्रों में अच्छी आदतों, मूल्यों, आदर्शों तथा भावात्मक सन्तुलन जैसे गुणों का विकास करना।

3) छात्रों में पारस्परिक सम्बन्धों का विकास करना।

4) छात्रों को रिक्त समय के सदुपयोग के लिए निर्देशन देना।

5) छात्रों को स्वस्थ मस्तिष्क बनाये रखने में सहायता करना।

व्यक्तिगत निर्देशन के कार्य